राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 4 | विधान सभा के चतुर्थ सत्र का पहला दिवस | संख्या 1

सोमवार,

दिनांक 24 फरवरी, 1969

विधान सभा की बैठक म.पश्चात 4 28 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई। (श्री निरन्जननाथ आचार्य अध्यक्ष, पदासीन)

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

श्री अध्यक्ष: शपथ ग्रहण। श्री बिरदाराम!

श्री बिरदाराम (जालोर सु.): ने शपथ ग्रहण की।

सदन की मेज पर रखी गई राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की प्रति

सचिव, विधान सभा (श्री बी.के.डी. बैजल): महोदय, मैं राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की प्रति सदन की मेज पर रखता हूं।

(कृपया परिशिष्ट 1 देखिये)

स्वर्गीय डा. सम्पूर्णानन्द, श्री माणिक्य लाल वर्मा, श्री डा. एन. अन्नादुरै और श्री रामकिशन भांभू के निधन पर शोक प्रकट

श्री अध्यक्ष: निम्नांकित महानुभावों के निधन पर शोकः—

(1) श्री राम किशन भांभू (भूतपूर्व सदस्य विधान सभा)

(2) डा. सम्पूर्णानन्द

(3) श्री माणिक्यलाल वर्मा

(4) श्री डी.एन. अन्नादुरै

श्री मोहनलाल सुखाडिया (मुख्य मंत्री): माननीय अध्यक्षजी, इस सदन की पिछली बैठक और आज इस बैठक में हमारे देश के दो महान् सेवक डा. सम्पूर्णानन्दजी और श्री माणिक्यलालजी वर्मा हमारे बीच आज नहीं रहे और उनका स्वर्गवास हो गया। इसका सारे देश को और राजस्थान को एक जबर्दस्त धक्का पहुंचा है और आज समाज उनकी सेवाओं से वंचित हो गया है। डा. सम्पूर्णानन्दजी काशी में पैदा हुए और जब हमारा देश परतन्त्र था उस जमाने में एक क्रान्तिकारी, क्रान्तिकारी विचारक और देश के लिये कई बार जेल की यातना भुगतने वाले महान् व्यक्तियों में उन्होंने काम किया। वे यू.पी. में काफी अर्से तक मन्त्री पद पर भी रहे और मुख्य मंत्री पद पर भी रहे और उसके बाद राजस्थान के राज्यपाल के पद पर भी यहां उन्होंने कार्य किया। डा. सम्पूर्णानन्दजी जहां राजनैतिक क्षेत्र में एक कर्मठ कार्यकर्ता और समाजवादी विचारों को आगे रखने वाले व्यक्तियों में रहे हैं, वहां वे दार्शनिक, बहुत बड़े लेखक और काफी पुस्तकों के पढने वाले और भारतीय संस्कृति के लिये गहरा चिन्तन करने वाले व्यक्तियों में से थे ......

श्री रामचन्द्र आर्य (नोहर): गिनती तो वे नहीं जानते थे।

श्री मोहनलाल सुखाडिया : डा. सम्पूर्णानन्दजी यहां से जाने के बाद काशी विश्व विद्यापीठ के कुलपति के रूप में काम कर रहे थे ग्रौर उनके निधन से सारे देश के अन्दर ग्रौर यू.पी. के अन्दर भी शोक व्याप्त हुआ, उससे यह सदन भली प्रकार से परिचित है। उन्होंने जो कुछ सेवाएं देश के लिए की हैं, देश हमेशा उनकी सेवाग्रों के लिये उनका ऋणी रहेगा ग्रौर मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ग्रौर उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री माणिक्यलाल जी वर्मा राजस्थान के ही, पुराना जो मेवाड कहलाता था, उसके एक छोटे से गांव में पैदा हुए, एक मामूली घर में पैदा होकर जिस जमाने में देश के अन्दर असहयोग आन्दोलन ने गहरी नींव प्राप्त नहीं की थी, उस समय में बैंगू, बिजोलिया, बूंदी वगैरह इलाकों में जो किसानों के ऊपर सामन्ती जुल्म उस जमाने में थे उनके विरुद्ध उन्होंने पथिकजी के साथ मिल कर ग्रौर बाद में उन किसानों से मिल कर जो कुछ किया, वह मैं समझता हूं भारत के इतिहास का बडा महत्वपूर्ण ग्रंग है। इस प्रकार सामूहिक कर बन्दी का आन्दोलन इतने बडे रूप में सबसे पहले बिजोलिया, बैंगू में शुरू हुआ था ग्रौर वहां के किसानों में उस जमाने में जब किसान ग्रौर जनता आन्दोलन करे इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, उन्होंने उनमें जीवन पैदा किया ग्रौर उनको खडा किया ।

माणिक्यलालजी वर्मा ने, जब से उन्होंने होश सम्भाला, यह कहा जाय तो उपयुक्त होगा, तब से उनका निधन हुआ तब तक लगातार जनता की सेवा में ही अपने आपको लगाया। मेवाड में प्रजामण्डल स्थापित करने में उनका हाथ रहा, 1938 के आन्दोलन में उनका हाथ रहा, 1942 के आन्दोलन का नेतृत्व करने में उनका हाथ रहा ग्रौर राजस्थान में कष्ट सहन करने वाले व्यक्तियों की बात कही जाय तो काफी कष्ट सहन करने वाले व्यक्तियों में माणिक्यलालजी वर्मा का नाम ऊंचा मान कर चलना पडेगा।

1938 के आंदोलन में हम में से शायद बहुत लोग जानते है कि वह मेवाड से बाहर बैठकर आन्दोलन का संचालन कर रहे थे, तो पुलिस घसीटकर, पीटते हुए उनको ले गई थी। उससे उनके ऊपर जिंदगी में उनके पेट में अल्सर ग्रौर दूसरी बीमारियों का असर हुआ ग्रौर वे लगातार कष्ट सहन करते रहे। पुराना राजस्थान बना तो उसके वह प्रधान मंत्री थे। लेकिन प्रधान मंत्री होते हुए भी उनके मन में यही रहता था कि राजस्थान पूरा बने । जो रियासतें बाकी रह गई हैं उनका भी एकीकरण हो ग्रौर बृहद् राजस्थान का स्वरूप बनें । वर्मा साहब बृहद् राजस्थान के मंत्री हो सकते थे, मुख्यमंत्री हो सकते थे ग्रौर ज्यादा से ज्यादा सम्मान प्राप्त कर सकते थे लेकिन पुरा राजस्थान के बाद उन्होंने अपने जीवन हमेशा इस बात के लिए ज्यादा काम में लिया कि आदिवासियों के लिए, घुमक्कड जातियों के लिए, जन जातियों के लिए, जिस वर्ग के लिए उन्होंने कोई कल्पना भी नहीं की थी, उनके मन में भावना उत्पन्न थी, चाहे गडरिया लुहार हों, चाहे बंजारों का सवाल हो, चाहे कंजरों का सवाल हो, उनके हित के लिए आगे बढकर ज्यादा से ज्यादा ध्यान उस तरफ उन्होंने आकर्षित किया।

(श्री मोहनलाल सुखाडिया)

काफी अवस्था हो जाने के बाद भी बोर्डर, जैसे आप सब जानते हैं, क्या मुश्किल हालात हैं, वहां एक रचनात्मक दृष्टि से हमारे सीमावर्ती इलाकों में रात दिन घूमा करते थे। उनके मन में यही भावना रहती थी कि हमारी सीमाओं पर रहने वाले लोगों में राष्ट्रीय भावना पैदा हो और वहां हरिजनों, भीलों, राजपूतों, महाजनों और मुसलमानों सभी तरीके के लोगों के बीच में उठते बैठते थे और एक प्रकार से उन्होंने उनको अपना बना लिया था। मुझे याद है कि पिछले वर्ष उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। वह बीमार हुए तो डाक्टरों ने डाइबिटीज के बारे में कहा कि काफी मात्रा में बढ गई है, आपको विश्राम करना चाहिए। उन्होंने कुछ दिन विश्राम किया, वापस काम पर रवाना हो गए। अंतिम दिनों में वह कहते थे कि मेरी इच्छा यह है कि काम करते हुए हार्टफेल हो जाय, काम करते हुए मरूं, बिस्तर में पड़े पड़े नहीं। परमात्मा को शायद उनकी भावना पूरी करनी थी, वही हुआ। एक दिन पहले भी वह लिखते रहे, वह क्रांतिकारी गीत तैयार करते थे, एक क्रांतिकारी भावना आखिर तक उनके दिल में थी, जो उनका निधन हुआ वह हृदयगति रुक जाने से हुआ। जीवन भर वह समाज की सेवा करते रहे लेकिन उन्होंने अपने लिए सेवा नहीं की। कुछ ही घंटों में समाचार प्राप्त हुए कि वह अस्पताल में भर्ती हुए हैं। थोडी देर ही बाद समाचार मिले कि वह समाप्त हो गए। किसी की सेवा लेने की उनको नौबत नहीं आई, सेवा देने का ही उन्होंने काम किया। मैं समझता हूं, इस प्रकार के वातावरण में पैदा हुआ व्यक्ति, जिनके दिमाग में वृद्धावस्था में भी क्रांति की ही भावना काम करती रही हो, कम व्यक्तियों को ही ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता है।

उनकी शवयात्रा के समय, मुझे वे शकलें भी याद आती हैं, जो बंजारे रास्ते में मिले, आसपास के क्षेत्रों के आदिवासी, हरिजन इत्यादि मिले, वह पूछने लगे कि हमारा कौन है ? हमारे लिए रात दिन काम करने वाले चले गए। उनके घर पर हमेशा बंजारे, आदिवासी, हरिजन इत्यादि बैठे रहते थे। रात दिन वह उनके कल्याण की बातें सोचा करते थे। वह लोक सभा में जा सकते थे लेकिन नहीं गए राज्य सभा के लिए हमने कहा, तो उन्होंने नहीं की। खादी बोर्ड के चेयरमैन बनाने के बारे में कइयों को खयाल होगा कि शायद उनकी इच्छा थी लेकिन मैं जानता हूं कि किन हालात में समय समय पर उनको राजी करना पडता था। उनके दिल में एक ही बात रहती थी कि अगर कष्ट भी हैं, मुश्किलें भी हैं तो अपने ही घर की हैं। आज वह कर्मठ व्यक्ति हमारे बीच नहीं रहे। वह पुरानी पीढी के व्यक्ति थे। श्री जय नारायण व्यास भी थे, श्री वर्माजी थे जो राजस्थान और देश की दृष्टि से सारे प्रश्नों को सोचते थे, वह आज हमारे बीच नहीं रहे।

आदिवासियों में, राजनैतिक क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में, एक बहुत बडा समाज सेवी और राजनैतिक दृष्टि से एक क्रान्तिकारी विचारक देश ने खोया है। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिवार के लिए संवेदना प्रकट करता हूं।

(श्री मोहनलाल सुखाडिया)

श्री रामकिशन इसी सदन के सदस्य रहे हैं और उनका भी इसी वर्ष देहावसान हो गया, उनके लिए भी मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

इसी वर्ष कुछ समय पहले मद्रास में श्री अन्नादुरै को काम करने का मौका मिला। उन्होंने लोकप्रियता से काम किया। देश में इस बात की भावना थी कि देश के पृथक करण के बारे में शायद वहां की पार्टी और दूसरे लोग सोचते थे। लेकिन उन्होंने अपने विचारों से और अपने व्यक्तित्व से कहूं तो शायद उपयुक्त होगा, इस प्रकार का असर सारे देश पर डाला कि जसे वह देश के एक महत्वपूर्ण अंग हैं और देश के महत्वपूर्ण अंग के तौर पर वे काम करते हैं। जब देश के सामने मौका था इस बात का कि एक ही पार्टी, एक ही प्रदेश में बहुमत में आकर अपने ढंग से काम को आगे बढाना चाहती है, उस व्यक्ति की असामयिक मृत्यु हो जाने और हमारे बीच न रहने से जो क्षति पहुंची है वह न केवल तामलि नाडू की है बल्कि सारे देश की है। उनके प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, उनके परिवार के सदस्यों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल की ओर से इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री **भैरोंसिंह** (किशनपोल बाजार) : अध्यक्ष महोदय, राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल श्री संपूर्णानन्दजी देश में आजादी के एक सेनानी के रूप में विख्यात रहे हैं। साहित्य और सांस्कृतिक क्षेत्र में भी उनका बहुत बडा योगदान रहा है। 1947 से पूर्व स्वतंत्रता संग्राम में देश के प्रति जिस प्रकार सच्ची निष्ठा का प्रदर्शन उन्होंने किया वह हम सब के लिए एक प्रकार से स्तुति करने योग्य है। राजनैतिक जीवन में श्री संपूर्णानन्दजी उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री व अन्य विभागों के मंत्री काफी वर्षों तक रहे। और वहां भी उन्होंने अपनी विद्वत्ता का परिचय दिया। राजस्थान के राज्यपाल के रूप में उन्होंने राजस्थान में कार्य किया। उनके अन्तिम क्षण कुछ दुर्भाग्यपूर्ण अवश्य रहे। कुछ सत्तापरस्त लोगों के दबाव के कारण उनके हाथ से कुछ ऐसे कृत्य अवश्य हुए जिनके कारण उनका व्यक्तित्व जनता के समक्ष विवादास्पद रहा। लेकिन इस प्रसंग में उन्होंने जो देश की सेवायें कीं उन सेवाओं को हम भूल कर नहीं चल सकते। देश के प्रति जिस सच्ची निष्ठा का उन्होंने परिचय दिया भारत उससे उऋण नहीं हो सकता। इसलिये मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्री सम्पूर्णानन्दजी के देहावसान पर अपनी श्रद्धान्जली अर्पित करता हूं और उनके शोक संतप्त परिवार के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इस दुख को सहन करने की उनको शक्ति प्रदान करे।

मद्रास के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री अन्ना-दुरै, यह भी देश के एक ऐसे महान् व्यक्ति थे जिन्होंने कुछ ही समय में एक बहुत बडा राजनैतिक चमत्कार सारे देश की जनता के समक्ष रखा। सन् 1967 के आम चुनावों के पूर्व श्री अन्नादुरै के सम्बन्ध में भारत की जनता उनकी कार्यकुशलता से, उनके मौलिक विचारों से चाहे इतनी अधिक प्रभावित और परिचित नहीं थ।

(श्री भैरोंसिह)

लेकिन 1967 के आम चुनावों में उनके व्यक्तित्व ने जिस प्रकार का चमत्कार दिखाया उससे सारे हिन्दुस्तान की जनता उनसे परिचित हुई और प्रभावित हुई। सन् 1967 के बाद जब तक वे मुख्य मंत्री रहे उस काल में और उस काल के पूर्व देश में देश के विभाजन की कई प्रकार की चर्चाएं चली, आन्दोलन हुए। उसमें कई दिक्कतें भी आयीं लेकिन उन्होंने अपने व्यक्तित्व से लोगों में जाकर लोगों को संतोष दिला कर इस बात की हवा बनाने का प्रयत्न किया और उसमें वे काफी अंशों में सफल भी हुए कि तामिलनाड् का विकास इस देश के साथ एक रस होने से ही हो सकता है यह उनका प्रयास था। भगवान ने उनको इसमें सफलता प्रदान की। देश में विभाजन की मनोवृत्ति या पृथक्करण की मांग को ज्यादा बढावा नहीं मिल सका इसका श्रेय श्री अन्नादुरै को है। देश के लिये उन्होंने इतना बडा कार्य किया देश उसके लिये उनका बडा कृतज्ञ है। मैं उनको अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं और शोक संतप्त परिवार को उनके निधन का शोक वहन करने के लिये भगवान से प्रार्थना करता हूं।

श्री माणिक्यलालजी वर्मा, जिनसे पिछले दिनों में मेरा व्यक्तिगत रूप से काफी परिचय आया है, वे एक स्पष्ट वक्ता तो थे ही लेकिन बडे निर्भीक थे। सही बात कहने में किसी प्रकार का उनको कोई संकोच नहीं था। अध्यक्ष महोदय, मेरे स्वयम् और उनके बीच में एक बार कुछ ऐसी विवादास्पद स्थिति बन गयी लेकिन जब उनसे बात करने का अवसर आया तो मैं उनसे इस बात के लिए बडा प्रभावित हुआ कि उन्होंने टीकाटिप्पणी करने के बजाय मुझ से सीधा सवाल यह पूछा कि इन चीजों को दुरुस्त करने के लिये उपाय बताये जायं मैं उनको दुरुस्त करने के लिये तैयार हूं। उस समय से लेकर अन्त तक व्यक्तिगत रूप से मेरे उनके बहुत अच्छे सम्बन्ध रहे और खास तौर से सीमावर्ती क्षेत्र में जब कभी भी उन्होंने दौरे किये, मैं समझता हूं, कोई दौरा ऐसा नहीं था जिसके सम्बन्ध में जाने से पहले और आने के बाद हमारे दोनों के बीच विचार-विमर्श न हुआ हो। एक बार स्वयम् जैसलमेर में जैसलमेर के विधायक के साथ जब हम बात चीत कर रहे थे उन्होंने जिस वेदना से सीमावर्ती क्षेत्रों की हालत बतायी उससे ऐसा लगता था कि जिन वेदनाओं के निदान का दरख्त नहीं है उनका निदान करने वाला एक उपचारक के रूप में राजस्थान का नेता काम कर रहा है। यह बात सही है कि सीमावर्ती क्षेत्र के निर्धन परिवारों के लिये वह व्यक्ति एक वरदान के रूप में सीमावर्ती क्षेत्रों का भ्रमण कर रहा था। हमें दुख है कि इस प्रकार का व्यक्ति हमारे बीच से चला गया। मैं उन्हें अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

श्री रामकिशनजी मांमू इस सदन के सदस्य रहे हैं। उनसे मेरा अच्छा परिचय रहा है और इस परिचय की दृष्टि से सदन में जिस प्रकार का योगदान, उनकी मिलन सारिता और सहज स्वभाव आज भी हमारे सामने एक याद की वस्तु है। मैं अपनी

(श्री भैरोंसिह)

ग्रोर से ग्रौर अपने दल की ग्रोर से उनको श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं ।

श्री रामकिशन (बैर) : अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय डा. सम्पूर्णानन्द इस देश में एक ऐसे राजनीतिज्ञ थे जो राजनीतिज्ञ के साथ साथ दार्शनिक ग्रौर साहित्यिक भी थे ।

जहां तक उनका आजादी के आन्दोलन में हिस्सा लेने का सवाल है, मैं समझता हूं हिन्दुस्तान की आजादी में सब से ज्यादा जिन्होंने बहादुरी से हिस्सा लिया उनमें से डा. सम्पूर्णानन्दजी भी एक थे । कला ग्रौर साहित्य के क्षेत्र में जो उनकी देन है उसको कभी भूल नहीं सकते ।

जहां तक मेरा सम्बन्ध है सन् 1934 के आस पास से डा. सम्पूर्णानन्दजी से परिचित हूं ग्रौर नासिक में कांग्रेस से अलग होने का हमने फैसला किया उस समय डा. सम्पूर्णानन्दजी उत्तर प्रदश की संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के सचिव थे । उन्होंने जिस प्रकार की किताबें लिखीं, जिस प्रकार के विचार राजनैतिक धरातल को स्पष्ट करते हुए देश के सामने रखे, व्यक्ति, समाज व्यवस्था ग्रौर दर्शन पर जो विचार अपने लेखन द्वारा देश के सामने रखे उनको नहीं भूल सकते । "समाजवाद ग्रौर अन्तर्राष्ट्रीय कानून" यह किताब उनकी ऐसी देन है जिसके द्वारा देश के निर्माण का रास्ता साफ होता है । उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री रहते हुए किसी आपसी चुनाव में पराजित होने के बाद मुख्य मंत्री पद से स्तीफा दे देना एक प्रमुख प्रश्न था ग्रौर उसको आगे रखकर हिन्दुस्तान की राजनीति को आगे करने की बात रखी । सब लोगों के मन में उनके प्रति सम्मान था । दुर्भाग्य से जीवन के अन्तिम दिनों में राजस्थान के राज्यपाल के रूप में कुछ ऐसे गलत सलाहकारों के बीच फंस गये जिससे उनका व्यक्तित्व न उत्साहपूर्ण रहा ग्रौर न आकर्षक । यदि उस हिस्से को हटादें तो डा. सम्पूर्णानन्द जीवित राज-नीतिज्ञों में एक जीवित राजनीतिज्ञ थे । उन विवादों में न जाकर मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि डा. सम्पूर्णानन्द शान्त, सहज राजनीतिज्ञ आचरण के परिपोषक थे तो उनको यह सबसे बडी श्रद्धान्जलि होगी ।

जहां तक वर्मा साहब का सम्बन्ध है हमारे राजस्थान की रियासतों की आजादी के वे अगुआ थे । उन जैसे कर्मवीरों की तपस्या का ही फल है कि देश में लोकतन्त्र स्थापित हुआ ग्रौर साधारण गरीब लोगों को आगे बढने का मौका मिला ।

जब उनको खादी बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया तो एक बात मेरे मन में उठी । बोर्ड की एक दो मीटिंगों में मैंने हिस्सा लिया, वर्माजी की बुराई से निरन्तर संघर्ष करने की आदत थी, उसमें कमी नहीं होने वाली है ग्रौर खुद ने बोर्ड में आकर मीटिंगों में कहा कि मुझे चोरों का चौकीदार बना दिया गया है उस वक्त उनके प्रति मेरी श्रद्धा काफी बढ गयी थी ?

मैं स्वर्गीय वर्माजी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ग्रौर उनके शोक संतप्त परिवार को सम्वेदना प्रकट करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय, जहां तक स्वर्गीय अन्नादुरै का सवाल है, यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हिन्दुस्तान के नये राजनेताग्रों

(श्री रामकिशन)

में वे सबसे उच्च श्रेणी में चले गये थे, इस दृष्टि से ही नहीं कहें कि वे तामिलनाड्र के मुख्य मंत्री हो गये थे, ग्रौर उन्होंने द्रविड मुन्नेत्र कडगम का संगठन कर लिया था ग्रौर उसमें सफलता प्राप्त कर ली थी, चले गये हैं। श्री अन्नादुरै में एक विशेषता थी। मैं समझता हूं कि हिन्दुस्तान के आन्दोलन काल में वे ऐतिहासिक पुरुष हो गये थे। उनमें पिछडे, दलित लोगों के लिए विशेषतौर पर ब्राह्मणों के अन्याय से पीडित लोगों के लिए दर्द था। तामिलनाड्र में उन्होंने उनको संगठित किया ग्रौर न केवल उन्हें संगठित किया वल्कि सारे देश के पीडितों में एक नव-भावना जगा दी थी।

श्री अन्नादुरै का अलग ढंग से भी मैंने विश्लेषण सुना था। हिन्दुस्तान के दो आदमी आपस में वात कर रहे थे। एक ही गाडी में दो आदमी मिल गये उनमें एक ग्रंग्रेजी के विरुद्ध था ग्रौर दूसरा हिन्दी का विरोधी उन दोनों महापुरुषों में एक डा. राम मनोहर लोहिया थे, जिनका कि आन्दोलन का एक ही ढंग था। मुश्किल यह थी कि डा. लोहिया का संकल्प था कि मैं हिन्दी ही बोलूंगा। तब श्री अन्नादुरै से कहा कि तमिल में वात करें। तब दोनों की वात हुई। उनकी वात का सारांश यह था। जो सज्जन अनुवादक का काम कर रहे थे। उन्होंने जो कुछ वताया उससे आभास हुग्रा कि श्री अन्नादुरै हिन्दुस्तान की राजनीति में एक नया मोड दे सकते हैं। वे एक वडे आन्दोलन कर्ता हैं। ग्रान्दोलन की शक्ति केवल प्रदर्शन में ही नहीं है ग्रौर न केवल राजनैतिक सत्ता जैसी चीज प्राप्त करने में है। उन्होंने दलितों ग्रौर पिछडे हुए लोगों की आवाज को उठाकर हिन्दुस्तान की सामाजिक व्यवस्था ग्रौर अर्थ व्यवस्था को तोडा जो राजगद्दी के मालिक माने जाते हैं उनको ललकारा। उनके आन्दोलन से यह बात हुई कि दलितों की पांच हजार वर्षों से चली आ रही जाति व्यवस्था अब टूट रही है ग्रौर उन्होंने उनके स्वाभिमान को जगाया है। दलितों के स्वाभिमान को जगाने के बाद हिन्दुस्तान में केवल एक ही ऐसा मुख्य मंत्री हुआ है, जिसने अपने घोषणा-पत्र पर अमल करने की कोशिश की है। हरेक राजनैतिक दल चुनावों के समय अपना घोषणा-पत्र निकालता है ग्रौर सत्ता में आने के बाद शायद उन राज्यों के मुख्य मंत्री उस कसौटी पर खरे उतरते हों परन्तु पिछडी जातियों का यह नेता पिछडे हुए लोगों की कीमत को ज्यादा जानता था। जब तक जीवत रहे मद्रास में चावल एक रुपया किलो विका। वे जब तक जीवित रहे मद्रास में चावल की कीमत को ऊंची नहीं जाने दी। राजनीति में निष्ठा का जो अभाव आ रहा था वह निष्ठा श्री अन्नादुरै ने जगाई ग्रौर लोगों में यह भावना पैदा की कि आखिर सारे राजनीतिज्ञ झूठे नहीं होते हैं अच्छे भी होते हैं।

स्वतन्त्र आन्दोलन का, अध्यक्ष महोदय, दूसरा गुण उनमें वहुत व्यापक था। विरोधी सरकारें, संयुक्त दलीय सरकारें कई जगह अस्तित्व में आयी हैं परन्तु उनमें ज्यादातर नेतागण उच्च वर्ग के होते थे इसलिये वे प्रतिमाह जाकर दिल्ली की सरकार से मिलते रहें लेकिन अन्नादु

(श्री रामकिशन)

जब तक जीवित रहे, किसी प्लानिंग कमीशन की बैठक या मुख्य मन्त्री सम्मेलन की बैठक में शायद वे गये हों अन्यथा वे कभी दिल्ली नहीं आये। उनके मन में एक दर्द था। जो पिछडी हुई जाति के लोग हैं, उनके स्वाभिमान को जगाना है। वाणी की कीमत को स्पष्ट करना है। यह राजनिति के लिये, मद्रास के लिये, सारे देश के लिये उनकी बहुत बडी देन है। सच्ची श्रद्धांजलि हिन्दुस्तान के लोगों के लिये यही हो सकती है कि वे वाणी की कीमत करना सीखें और उन बातों को न कहें जिसे पूरा करने की क्षमता नहीं हो।

इसी प्रकार श्री मांभू, नोहर से निर्वाचित हुए। सदन की हैसियत से तो नहीं किन्तु कभी कभी नोहर जाते थे तो उनसे मिलता था। वे विशुद्ध किसान थे। वे एक प्रकार से राजस्थान के साधारण किसान थे। उनकी यह प्रबल इच्छा थी कि राजनीति स्वच्छ और साफ हो।

मैं इन सब दिवंगत मृतात्माओं को, जिनकी कि देश को आवश्यकता थी, उन सब को मैं और मेरे दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता (बान्सूर) : अध्यक्ष महोदय, डा. सम्पूर्णानन्द, श्री माणिक्यलाल वर्मा, श्री अन्नादुरै और श्री रामकिशन मांभू, एम. एल. ए., आज हमारे बीच में नहीं है। मैं इन दिवंगत आत्माओं के प्रति अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि प्रकट करता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : अध्यक्ष महोदय, आज माणिक्यलालजी वर्मा, जिनको राजस्थान की राजनीति में ही नहीं बल्कि देशी राज्यों में जो आन्दोलन स्वाधीनता के लिये, अपना राज्य कायम करने के लिये, स्थापित करने के लिये हुआ उसमें श्री माणिक्यलालजी वर्मा का जो योगदान रहा, विशेषतौर से उन्होंने जिस प्रकार किसानों को, शोषित वर्गों को संगठित करके शोषक वर्ग से संघर्ष लेकर और उनके आर्थिक हितों की रक्षा करने का प्रयत्न किया उससे हिन्दुस्तान के देशी राज्यों को और विशेषतौर पर राजस्थान के राजनैतिक आन्दोलन को एक नई और क्रान्तिकारी दिशा मिली। हमारा दुर्भाग्य है कि राजस्थान के वे पुराने नेता, जो अगुआ थे इस देश की स्वतन्त्रता आन्दोलन के, और जो चाहे आज उस दल के सदस्य क्यों न रहे हों जिसके हाथ में आज सत्ता है और जिसके विरोध में जनता में असन्तोष है, परन्तु श्री वर्मा के दिल में जो एक लगन थी, उनके दल में उत्पीडित जनता के लिये पीडा थी। मुझे याद है, 1952 में जब मैंने कांग्रेस छोडी, उस समय राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के श्री वर्मा प्रधान थे और उन्होंने मुझे बुलाया और बातचीत की और खुद उन्होंने कहा कि यह मैं महसूस करता हूं कि कांग्रेस ने देश को आजादी तो दिला दी लेकिन उससे आगे जाकर जो आर्थिक रूप से समाज-वाद कायम करने का जो काम है, वह मुश्किल होता नजर आता है। और उन्होंने कहा कि वास्तव में अगर देश में समाजवाद को कायम करना है तो कांग्रेस में शायद यह शक्ति नहीं है इसलिये उन्होंने बहुत इस बात के लिये मुझे प्रेरणा दी और इस बात के लिये आशीर्वाद दिया कि इस लगन के साथ नौजवानों को अवश्य जाना चाहिये। कांग्रेस अब इस काम को करने में समर्थ नहीं होगी

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

छोटा राजस्थान के वे मुख्य मन्त्री बने और मुख्य मंत्री के रूप में उनको मुझे देखने का मौका मिला और दूसरे मुख्य मन्त्रियों को भी देखने का मौका मिला है परन्तु सत्ता के लिये उनके मन में विशेष मोह नहीं था और वे जनता में ही जाना चाहते थे। वे अपने आपको सत्ता में एडजस्ट नहीं कर पा रहे थे। सत्ता में उनकी तबियत एक भिची हुई हो, ऐसा वे महसूस करते थे। और अन्त तक वे संघर्ष रत ही रहे। हर खराब बात का वे विरोध करते थे हर तरह के अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने की उन्होंने हमेशा कोशिश की। मैं समझता हूं पुराने कांग्रेसजनों की जो परम्परा थी खराब बात के खिलाफ आवाज उठाने में हिचकिचाते नहीं थे, लेकिन माणिक्यलालजी वर्मा अन्त तक भी इस बात को भूले नहीं थे। जो भी गलत बात उनको लगती थी उसको निर्भीकता के साथ कहते थे, इसी रूप में राजस्थान की जनता उनको देखती थी। मैं समझता हूं उनके स्वर्गवास से न केवल राजस्थान की जनता को बल्कि सारी हिन्दुस्तान की उत्पीडित जनता को बहुत बडी क्षति पहुंची है। मैं उनको अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

श्री अन्नादुरै ने तामिलनाडु के मुख्य मंत्री के रूप में न केवल तामिल नाडु के नेता के रूप में बल्कि एक राष्ट्रीय राजनीतिक नेता के रूप में ख्याति प्राप्त कर ली थी। उनका परिचय न केवल हमारे देश में ही बल्कि विदेशों में भी इसी रूप में होने लगा था। जिस तरह से अपनी प्रान्त की जनता को अपनी छाती से लगाया जिस प्रकार से शासन के खिलाफ उन्होंने शोषित जनता को जागृत करने का प्रयत्न किया इसी कारण आम जनता का उनको जबर्दस्त प्यार मिला। मृत्यु के बाद जो उनकी शव यात्रा निकली उसमें इतनी भीड शामिल हुई वह भीड इस बात की प्रतीक है कि वे कितने महान थे, कितना जबर्दस्त जनता का उनको प्रेम प्राप्त था। इतना सम्मान हिन्दुस्तान के इतिहास में किसी भी राज नेता को मिला हो उसमें ये भी एक थे।

डा. सम्पूर्णानन्द देश के राजनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञ हुए हैं। देश की आजादी से पहले जो उनका योगदान रहा, जिस प्रकार से उन्होंने समाज-वादी शक्तियों की पंक्ति में खडे होकर उन्होंने समाजवादी शक्तियों को आगे बढाने की उनके साथ चलने की इच्छा प्रगट की उसका हिन्दुस्तान की राजनीतिक इतिहास में बहुत बडा स्थान है। लेकिन खेद है आजादी आने के बाद वे अपने इन समाजवादी विचारों की कट्टरता पर कायम नहीं रह सके कांग्रेस की आपसी सत्ता को छीना झपटी में चन्द्र भानु गुप्ता से उनका संघर्ष रहा यही उत्तर प्रदेश के दुर्भाग्य का बहुत बडा कारण रहा है। मैं समझता हूं यह कोई छिपी हुई बात नहीं है श्री सम्पूर्णानन्द राज्यपाल के पद पर अपनी इच्छा से नहीं आये चन्द्रभानु गुप्ता से राजनीति में पिछड जाने के कारण उन्हें यह पद ग्रहण करना पडा।

सब से बडा खेद का विषय यह है कि जब वे राज्यपाल बने जो व्यक्ति स्वतंत्रता के लिये लडा जो समाजवादी विचार रखने वाला था उस व्यक्ति को भी सोहबत में कितना नीचा गिरा दिया उनका जीवन

Page No 10

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

इस बात का प्रमाण है। जो शख्श डेमोक्रेसी के लिये और सोशलिज्म के लिए लडने वाला, बडे बडे साहित्य को लिखने वाला था वही जब अन्त में राज्यपाल बने तब उन्होंने इस डेमोक्रेसी पर प्रहार किया। हिन्दुस्तान में सन् 67 के चुनाव के बाद, एक मौका आया, देश के विभिन्न प्रान्तों में कांग्रेस जिसके हाथ में गत बीस वर्षो से देश का शासन था वहां पर गैर कांग्रेसी शासन बनने का मौका आया, जब कि जनता ने कांग्रेस को रिजेक्ट कर दिया तब वहां डाक्टर सम्पूर्णानन्द ने दुर्भाग्यवश उनकी जिन्दगी में शायद यह पहला मौका आया जब उन्होंने उन डेमोक्रेटिक तरीके से राजस्थान की जनता की इच्छा के विरुद्ध जनता के ऊपर गोलियां चलवाकर अन डेमोक्रेटिक तरीके से यहां राजस्थान में कांग्रेस सरकार की स्थापना करवाई। इस तरीके से डा. सम्पूर्णानन्द ने अन्तिम दिनों में जो डेमोक्रेसी के ऊपर प्रहार किया, उससे उनका जहां सारा जीवन तेजोमय रहा वहां अन्तिम दिनों में जो धब्बा उन्होंने लगाया वह इतिहास में काले धब्बे के समान रहेगा। फिर भी जो उन्होंने अच्छे काम किये, अपने जीवन से देश को जो देन दी है उसके कारण उनके प्रति मैं श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

श्री रामकिशन जी भांमू जो भूतपूर्व विधायक थे उनसे कई बार मिलने का अवसर आया जो बहुत साधारण जनता के आदमी थे, उनके प्रति भी मैं श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

श्री मनोहर सिंह मह.त (मांडलगढ): अध्यक्ष महोदय, जो आज हम आजादी की सांस ले रहे हैं उनमें डा. सम्पूर्णानन्द जी सब से आगे आने वाले लोगों में हैं जिनका हाथ इस आजादी के प्राप्त करवाने में था। उनका आजादी हासिल करने में बहुत बडा योगदान था वे अंगारे के मानिन्द थे। जो खुद इस प्रकार प्रज्वलित होते थे जैसे मानो अग्नि में रखा हुआ अंगारा हो। वे सचमुच अंगारे थे जिन्होंने देश को आजाद कराया मैं उनके प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

पूज्य वर्मा जी के निधन से सबसे बडा नुकसान हुआ मांडलगढ तहसील को जो उनका हमेशा कर्मक्षेत्र रहा है। वे बागी थे, अन्याय के खिलाफ बगावत करना उनका परम धर्म था। वे छोटे राजस्थान के मुख्य मंत्री बने लेकिन वह उनको अपनी आदत के विपरीत लगा। कोई भी पद लेने से उन्होंने हमेशा मना किया। वे जहां क्रान्तिकारी थे वे सीना खोलकर सामन्तों को कहते थे कि यह मेरा सीना है आपको गोली चलाना है तो चला दो। वे कभी अन्याय के सामने नहीं झुके। जहां वे क्रान्ति कारी थे वहां समाज सुधारक भी थे मृत्युभोज, गंगोज के खिलाफ थे शराब के खिलाफ थे, कुरीतियों के और छोटे विवाह के बहुत खिलाफ थे उनको कभी कोई भीख मांगता हुआ मिल जाता तो, [redacted] वह भीख किसी तरह की हो दूध अन्न आदि के रूप में भी हो तो उन्हें बहुत बुरा लगता था उनके गीत जब याद आजाते हैं वे ऐसे मालूम पडते हैं जैसे आज ही बनाये हों जैसे उन्होंने लिखा····

फेंटो लायो फटी धोवती चली अंगरखी मोटा सूं
घर वाली जदा जाय ब्याव में मांग घाघरो
और सू

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

करे मैंस की गणी चाकरी तो भी पी न सके थूं छाछ
बावण होगी घर घर भटके बीज मिले नहीं बिगडे साख

एक लूगडा साटे पाछी का ढोवा सटकी बाकी
छोरा ने गुजराती होग्यो मिले न अजमा की फाकी

नटगी जमी सरंग तक बदल्यों
मिटगी है जाण पिछाण
उठावे दुःख

थारा छोरा ने राव नहीं
वे रोज उडावे है पकवान
घर टूट बलिन्डो दून्यों होग्यो
वठी महल है आलीशान।

फेंटो लायो फटी धोवती
चली अंगरखी मोटा सूं।

ऐसे थे वर्मा जी जो यहां से चले गये। वर्माजी 73 साल की आयु में भी पैदल चलकर जाते थे उनको हम कभी कहते आप की आयु के मुताबिक आपको पैदल न चलना चाहिये, वे अपने हाथ से महनत करने में विश्वास करते थे। उन्होंने हमेशा अन्याय के प्रति बगावत की है। आज उनके प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है जब कभी अन्याय हो बगावत करना उनका ध्येय रहता था। आज दीनवन्धु अकेला नहीं हम सभी दीनबन्धु के भाई हैं। माता नारायणी देवी उनकी ही माता नहीं हमारी भी माता है। वर्माजी के प्रति मैं थोडे शब्दों में यही कह देना चाहता हूं।

देशभक्त अर खरो बोलण्यो
तपी साहसी बांको,
दीखत में ऊपर सूं करडो
उर हो कंवलो जां को।

सांचो, सेवक दीन सहायक, वालो भारत मां को
माणिकलाल तप्योडो कुन्दन, कठे चल्योग्यो मां को ।।

अन्ना, करोडों का प्यारा अन्ना जिसके मरने पर लाखों कंठों से एक आवाज निकली अन्ना-अन्ना। उस मौत पर किसी को भी ईर्ष्या हो सकती है।

उसकी ही यह हिम्मत थी कि थोडे से समय में भी उसने राज्य को एक स्वस्थ, सुन्दर और स्थायी प्रशासन दिया। उसने कभी गांधी का नाम नहीं लिया लेकिन जो गांधी का नाम ले ले कर उसकी कसमें खा खा कर भी शराब से जो चिपके रहें जहां, वहां अन्ना ने ठोस काम किया। उसने इस बारे में क्या कहा :

68 की अप्रैल में आल इण्डिया प्रोहिबिशन कौंसिल का सम्मेलन हुआ था। उसमें अन्ना ने कहा था कि मैं भी शराबखोरी से बीस पच्चीस करोड रुपया आसानी से ले सकता हूं लेकिन जब मैं उन गरीब परिवारों की ओर, उनकी स्त्रियों और बच्चों की दशा की ओर देखता हूं तो मैं ठोकर मारता हूं उन पैसों को और उसकी आमदनी को और कांग्रेस राज्य ने जो शराब-बन्दी का काम चालू किया है उसको मैं हमेशा के लिये चालू रक्खूंगा मेरे राज्य में और दृढता से उस पर अमल करूंगा। उसने तो यहां तककहा भक्तवत्सलम् और कामराजजी का नाम लेक

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

के सत्याग्रह में वे लोग शामिल हों और सरकारों की शराब चलाने की नीति का विरोध करते हुए वे जेल जाना चाहते हैं तो मैं भी उनके साथ जेल जाने तक को तैयार हूं। ऐसे अन्ना को शत शत प्रणाम।

रामकिशनजी को मैंने देखा नहीं लेकिन उनके प्रति मैं अपनी विनम्र श्रद्धान्जली समर्पित करता हूं।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार, (हवा महल, जयपुर): अध्यक्ष महोदय,

मृत्यु मारती है मानव को
किन्तु कीर्ति बढ जाती है
ऐसे ही मानव हित श्रद्धा
स्वयं पुष्प बरसाती है।
मरण अमर कर देता जिसको
उसको मेरा सतत प्रणाम
वही पात्र श्रद्धा का निश्चय
जो करता है उत्तम काम।

अपने उत्तम कर्मों द्वारा
वे पाते हैं उत्तम धाम
नश्वर देह अनश्वरात्मा
किन्तु चिरस्थायी कर नाम।

राज्यपाल सम्पूर्णानन्द ग्रो
अन्नादुरई व्यक्ति महान्
माणिकलाल दलितजन का प्रिय
रामकिशन निज बन्धु सुजान
इन सबको श्रद्धान्जलि अर्पित
सदन समर्पित करता है
यह कवि भी अपने भावों का
उसमें ही रंग भरता है।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदन के नेता, अन्य दलों के माननीय नेता एवं माननीय सदस्यों ने द्वितीय राजस्थान विधान सभा के लिये नोहर क्षेत्र से निर्वाचित सदस्य श्री रामकिशन शर्मा, डा. सम्पूर्णानन्द, भूतपूर्व राज्यपाल, राजस्थान श्री माणिकलाल वर्मा, भूतपूर्व मुख्यमन्त्री, राजस्थान तथा तामिलनाडू के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री अन्नादुरई के आकस्मिक निधन पर जो भावनाएं व्यक्त की हैं, उनमें स्वयं की भावनाओं को सम्मिलित कर मैं सदन की ओर से एवं स्वयं की ओर से संवेदना प्रकट करता हुआ दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल तथा भारत के वयोवृद्ध नेता डा. सम्पूर्णानन्द गांधीजी की पीढ़ी के नेताओं में से थे। वे कुशल राजनीतिज्ञ, दर्शन व धर्म के श्रेष्ठ ज्ञाता, गम्भीर विचारक एवं प्रबुद्ध साहित्यिक थे। जनतन्त्र के वे रक्षक थे। उनका व्यक्तित्व राजनीति, दर्शन और साहित्य का अनुपम संगम था।

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी व राजस्थान के लोकनायक श्री माणिक्यलाल वर्मा के निधन से राजस्थान ने एक बडा राजनेता खोया है। स्वर्गीय श्री वर्माजी राजस्थान के निर्माण के पश्चात् इस राज्य के प्रथम मुख्यमन्त्री बने। उन्होंने जीवन पर्यन्त समाज के पिछडे वर्ग भील, मीणों व आदिवासियों के उत्थान के लिये रचनात्मक कार्य किया था उन्होंने सामन्ती शासन के विरुद्ध सक्रिय होकर "लाग बेगार" प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन किया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व एवं पश्चात् वे समाज की सेवा में ही लगे रहे समाज में

(श्री अध्यक्ष)

पूर्ण प्रभावशाली एवं लोकप्रिय होते हुए भी उन्हें सत्ता का प्रलोभन कभी आकर्षित नहीं कर सका। समाज एवं राज्य की बुराइयों को उन्होंने सदैव निर्भय होकर विरोध किया एवं कभी झुके नहीं। उनके त्याग, तपस्या एवं सादगीपूर्ण स्पष्ट व्यक्तित्व का ही कारण है कि लोग उन्हें लोक नायक के नाम से पुकारते थे।

तामिलनाडू के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री अन्नादुरैई दो वर्ष तक ही मुख्य मंत्री के पद पर रहे, परन्तु उन्होंने इस अल्पकाल में राज्य को जो सफल नेतृत्व दिया उसकी सर्वत्र प्रशंसा की गई है। तामिलनाडू की जनता में तो वे लोकप्रिय थे ही किन्तु राज्य के बाहर भी उनका सम्मान था। वे कुशल वक्ता के अतिरिक्त देशभक्त एवं निःस्वार्थ व्यक्ति थे।

इन सभी महानुभावों के दुखद निधन से राजस्थान एवं देश को अपार क्षति पहुंची है जो पूरी होना कठिन है।

मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वे दो मिनिट मौन खडे रहकर दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये प्रार्थना करें।

(सम्पूर्ण सदन दो मिनिट मौन खडा रहा)

सदन की कार्यवाही कल प्रातः 11 बजे तक के लिये स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही सायं 5.21 बजे दिनांक 25-2-69 के म.पू. 11 बजे तक के लिये स्थगित हुई)

परिशिष्ट—।

(सरदार हुकमसिंह, राज्यपाल, राजस्थान का अभिभाषण)

माननीय सदस्यगण,

विधान सभा के इस वर्ष के प्रथम अधिवेशन में मैं आप सबका हार्दिक स्वागत करता हूं।

2. हमारा राज्य आज अभाव की जिन भीषण परिस्थितियों में से गुजर रहा है वे आप सबके ध्यान में हैं। इस संकट का सामना करने के लिए धैर्य और मनोबल की अत्यन्त आवश्यकता है। इस भीषण अभाव की स्थिति में आपका व जनता का काफी सहयोग रहा हैं, जो सराहनीय है।

3. वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में अतिवृष्टि व कुछ ही समय बाद वर्षा के अभाव से राज्य को काफी क्षति पहुंची है। अधिक वर्षा से प्रारम्भ में कई स्थानों पर बाढें आयीं व बाद में सूखे से भीषण अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई। इस समय राज्य के 26 जिलों के 32 हजार 247 गांवों में से 22 हजार 799 गांव अभावग्रस्त हैं। इन गांवों की लगभग 1 करोड 32 लाख जनसंख्या अभाव स्थिति से प्रभावित हैं। इसके परिणाम स्वरूप राज्य के सभी आर्थिक क्षेत्रों में बुरा प्रभाव पडा है। जैसलमेर, बीकानेर, बाडमेर जोधपुर आदि जिलों में स्थिति काफी गम्भीर है और अनेक गांवों में तो लगातार पिछले कई वर्षों से अभाव की स्थिति बनी हुई है। अभाव ग्रस्त क्षेत्रों में अब तक 750 से अधिक सहायता कार्य प्रारम्भ किये जा चुके हैं जिन पर लगभग 7 लाख श्रमिक कार्य कर रहे हैं। श्रमिकों को अभाव-स्थिति के प्रारम्भ में जो मजदूरी दी जाती थी वह बढा दी गई है जो कि पूर्व से लगभग 33 प्रतिशत अधिक है। इन राहत कार्यों पर कार्य कर रहे श्रमिकों को सर्दी से बचाने के लिए सिरकियें, टिन की चद्दरें, तम्बू और चटाइयों आदि की व्यवस्था की गई है। उन्हें पेय-जल व चिकित्सा सुविधायें भी उपलब्ध करवाई गई हैं। इसके अतिरिक्त शिविर में रहने वाले श्रमिकों को रजाई, कम्बल और गर्म व सूती कपडे वितरित किये गये हैं। बच्चों और प्रसवासन्न महिलाओं के लिये दूध और अन्य पौष्टिक पदार्थ वितरित किये जा रहे हैं। प्रसवासन्न महिलाओं को प्रसव से दो सप्ताह पूर्व .75 पैसे प्रतिदिन और प्रसव के तीन सप्ताह बाद तक पूर्ण वेतन पर अवकाश की सुविधा दी जाती है। अपाहिजों एवं वृद्धों को निःशुल्क सहायता दी जा रही है। लगभग 7,500 व्यक्ति यह सुविधा प्राप्त कर रहे हैं।

4. इस प्राकृतिक कठिनाई का मुकाबला करने के लिए राज्य सरकार के अतिरिक्त कई स्वयं सेवी संस्थाओं, उदार चित्त व्यक्तियों कवियों, कलाकारों, विद्यार्थियों, पंचायत राज संस्थाओं आदि ने उत्साह वर्द्धक सहयोग दिया है। मुख्य मंत्री बाढ व अकाल सहायता कोष में अब तक लगभग 18 लाख 82 हजार रुपया एकत्रित हो चुका है तथा एक लाख दस हजार क्विंटल चारा भी दान के रूप में प्राप्त हुआ है।

5. अकाल की इस विभीषिका से पश्चिमी जिलों का पशु धन भी काफी

(सरदार हुकमसिंह)
प्रभावित हुआ है। उसको राहत देने के लिए निष्क्रमण की व्यवस्था की गई है। कमजोर पशुओं को राज्य के अन्दर अथवा बाहर रेलों द्वारा मुफ्त पहुंचाया गया है। निष्क्रमण मार्गों में स्थान स्थान पर चारा, राशन, पानी व चिकित्सा की व्यवस्था मुफ्त की गई है। अकाल क्षेत्रों में अनुदानित दरों पर 3 लाख क्विटल से अधिक चारा पहुंचाया गया है। दूसरे राज्यों, जहां से चारा खरीदा जा रहा है, वहां से राजस्थान के पश्चिमी जिलों की लम्बी दूरी तथा ब्रोड गेज से मीटर गेज पर ट्रांसशिपमेंट की कठिनाइयों आदि के बावजूद राज्य सरकार का यह सतत् प्रयत्न है कि यथेष्ट मात्रा में चारा इन जिलों में उपलब्ध होता रहे।

6. निरन्तर प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में पशु पालकों को 500) रु. तक चारे के लिए तकावी देने की व्यवस्था की गई है। इसके बावजूद भी कई पशुपालक ऐसे हैं जो अपने पशुओं को नहीं रख पाते ऐसे पशुओं के लिए 4? स्थानों पर केटल-कैम्प खोले गये हैं। राज्य सरकार ऐसे कैम्प में प्रति पशु प्रतिदिन पचास प्रतिशत सहायता 62 पैसे की सीमा तक दे रही है।

7. कमजोर पशुओं को पौष्टिक दाना देने के लिए 37 फीडिंग सैन्टर्स की व्यवस्था की गई है जिन में राज्य सरकार पचास प्रतिशत खर्चा करती है। इसी प्रकार बीकानेर जिले में अनुदानित दरों पर पशु दाना वितरित करने की व्यवस्था की गई है।

8. राज्य सरकार अभावग्रस्त क्षेत्रों में पेय-जल की विकट समस्या को हल करने के लिए पूर्ण प्रयत्न कर रही है। 750 गावों में सार्वजनिक कुओं से पानी खींचकर दिये जाने की व्यवस्था की गई है जिस पर राज्य सरकार द्वारा साढे बारह रुपये से 50 रुपये तक प्रतिदिन अनुदान दिया जाता है। चार पश्चिमी जिलों के कुछ गांवों में जहां पानी उपलब्ध नहीं है, 119 स्थानों पर पानी ट्रकों द्वारा तथा 10 स्थानों पर रेल द्वारा पहुंचाया जा रहा है। कई स्थानों पर जहां पानी पहुंचाना कठिन है वहां इस वर्ष 80 नलकूप खोदे जाने का कार्य हाथ में लिया गया है जिनमें से अब तक 22 नल कूप खोदे जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त एक्सपेरिमेन्टल ट्यूबवेल ऑर्गेनाइजेशन द्वारा खोदे गये 126 सफल नल-कूप चालू कर पेय-जल उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार ने बाडमेर जल प्रदाय योजना पर 15 लाख रुपये की स्वीकृति दी है।

9. उपरोक्त सहायता व्यवस्था पर इस वित्तीय वर्ष के अन्त तक लगभग 21 करोड रुपये खर्च होने का अनुमान है। भारत सरकार द्वारा अब तक 8 करोड 96 लाख रुपये की सहायता का प्रावधान किया गया है अतिरिक्त धनराशि के लिए भारत सरकार से मांग की गई है।

10. निरन्तर पडने वाले अकाल राजस्थान की आर्थिक स्थिति पर एक बहुत बडा बोझा है। राज्य सरकार जहां एक तरफ उत्पादन-कार्यों के जरिये राज्य की माली हालत को सुधारने का प्रयत्न करती है वहां इन दैवी प्रकोपों से पूर्व में किये गये प्रयत्नों से प्राप्त की गई सफलता विफल हो जाती है। इसलिए राज्य सरकार ने अकाल के स्थायी हल के लिए एक उप समिति का

(सरदार हुकमसिंह)

निर्माण किया था जिसने अपनी रिपोर्ट भी दे दी है। सरकार वित्तीय साधनों को ध्यान में रखते हुए उस रिपोर्ट को क्रियान्वित करना चाहती है जिसमें मरु-क्षेत्र में पानी के ट्यूब वेल्स खोदने, रीजनल पाइप लाइन लगाने, फौडर बैंक स्थापित करने आदि की योजनाओं पर विशेष बल दिया है। इसी दिशा में लूणकरणसर की लिफ्ट-इरीगेशन स्कीम को हाथ में लिया गया है। इससे उस क्षेत्र के विकास में काफी योगदान मिलेगा।

11. जुलाई में वर्षा एकाएक खूब तेजी से आई और सवाई माधोपुर, झुंझुनू उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाडा, सीकर, नागौर चित्तौड आदि जिलों में अतिवृष्टि के कारण भयानक स्थिति पैदा हो गई। कई स्थानों पर अतिवृष्टि के कारण काफी बांधों, सडकों एवं भवनों को क्षति पहुंची। कई गांवों में पानी भर गया जिससे मनुष्य व पशु बह गये, मकान गिर गये और जन धन की क्षति हुई। इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार से 3 करोड 81 लाख रुपये की सहायता प्राप्त हुई है, जिसमें से सिंचाई के तालाबों, सडकों एव सार्वजनकि भवनों की मरम्मत के लिए राशि दी गई। 28 लाख रुपये पंचायत समितियों को सहायतार्थ दिये गये।

12. सन् 1967–68 का वर्ष, वर्षा और मौसम की अनुकूलता की दृष्टि से बहुत ही अच्छा था। उस समय तक कृषि विकास कार्यक्रमों द्वारा जो उत्पादन क्षमता पैदा की गई थी उसका प्रतिफल 1967–68 में उत्पादन वृद्धि के रूप में स्पष्ट दृष्टिगोचर हुआ तथा कृषि-उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान के इतिहास में सर्वोत्तम रहा। 1967–68 में 66 लाख टन खाद्यान्न पैदा हुआ जबकि 1966-67 में 43.5 लाख टन ही हुआ था। किन्तु वर्षा के अभाव के कारण इस वर्ष में खरीफ की फसलों के उत्पादन के ऊपर काफी प्रतिकूल प्रभाव पडा है तथा रबी की उपज भी कम होने की सम्भावना है अतिवृष्टि एवं सूखे के बावजूद भी राज्य में खाद्य-स्थिति नियन्त्रण में रही है।

13. कृषि विकास कार्य-क्रम को बढ़ावा देने के लिए मुख्यत: सघन क्षेत्र कार्य-क्रम व अधिक उपज देने वाली किस्मों के कार्यक्रमों की ओर विशेष ध्यान दिया गया। इस ओर पंचायत राज संस्थाओं द्वारा भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिन इलाकों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है वहां सघन कृषि के प्रयत्न यथावत् जारी रहेंगे। इस वर्ष 11 पंचायत समितियों में सघन कृषि कार्य-क्रम का और विस्तार किया गया है। अब तक कुल 100 पंचायत समितियों में सघन कृषि कार्य-क्रम चालू किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त अधिक पैदावार देने वाली किस्मों के कार्य-क्रम को भी अपनाया गया है। इस कार्य-क्रम के अन्तर्गत संकर मक्का, ज्वार, बाजरा और मैक्सिकन गेहूं के बीजों का प्रयोग अनुमानतः 7 लाख 50 हजार एकड क्षेत्रफल में किया गया है। 1969–70 में इस कार्य-क्रम के अन्तर्गत 14 लाख एकड भूमि लिये जाने का लक्ष्य है। रसायनिक खाद 1967-68 में 1 लाख 22 हजार मैट्रिक टन वितरित की गई थी तथा 1968-69 में 1 लाख 59 हजार मैट्रिक टन वितरित किये जाने का अनुमान है।

14. पौध-संरक्षण का कार्य भी तत्परता-पूर्वक किया जा रहा है। 1967-68

(सरदार हुकमसिंह)

में यह कार्य 54 लाख एकड भूमि में किया गया था जब कि 1968-69 में इसके अन्तर्गत 66 लाख 40 हजार एकड भूमि ली गई है।

15. फल तथा सब्जी के उत्पादन की ओर किये गये प्रयास भी सफल रहे हैं और इनकी उपज पहिले से काफी अधिक है। इस वर्ष फल और सब्जी की अखिल भारतीय प्रतियोगिता में राजस्थान ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। सरकार का लक्ष्य है कि सघन खेती, अधिक उत्पादन देने वाली फसलें, अधिक भूमि पर सिंचाई आदि के माध्यम से कृषि-उत्पादन का स्तर ऐसा कर दिया जावे कि सूखे के वर्षों में भी राज्य अन्न के उत्पादन में आत्म-निर्भर हो सके।

16. राजस्थान भू-जल मण्डल कृषि-उत्पादन बढाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इसके अन्तर्गत नये व पुराने कुओं को गहरा करना, अकाल-ग्रस्त क्षेत्रों में नल-कूप बनाना, सर्वेक्षण तथा भू-जल परि-निरीक्षण आदि योजनायें मुख्य हैं। वर्ष 1968 में 226 नल-कूपों का बोरिंग किया गया व 11 हजार कुओं को गहरा किया गया। अलवर, भरतपुर, जोधपुर, नागौर, पाली, चित्तौड, डूंगरपुर, बीकानेर, झुंझुनू आदि क्षेत्रों मे भू-जल की उपलब्धि के लिए सर्वेक्षण कार्य किया गया है।

17. राज्य में भाखरा नहर तथा चम्बल नदी घाटी योजना के अन्तर्गत कोटा बैराज तथा नहरों का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। नहरों को पक्का करने व नहरों पर बनने वाले पक्के कार्य आदि चालू हैं। गुडगांव नहर परियोजान का कार्य भी काफी प्रगति पर है। इस योजना के पूर्ण हो जाने पर राजस्थान के भरतपुर जिले के कामां व डीग क्षेत्र में 67 हजार एकड भूमि में सिंचाई हो सकेगी इस परियोजना में राजस्थान का अपने क्षेत्र में लगभग 90 लाख रुपये खर्च करने का अनुमान है। इस वित्तीय वर्ष में 8 मध्यम योजनाओं पर कार्य चालू है इसके अतिरिक्त 1968-69 में 3 नई मध्यम श्रेणी की योजनाओं पर कार्य और प्रारम्भ कर दिया गया है। वे सेई-डाइवर्जन, जाखम व जैतपुरा बांघ हैं।

18. लघु सिंचाई योजनाओं को भी काफी महत्व दिया गया है। चालू वित्तीय वर्ष में राहत कार्यों के अन्तर्गत प्रारम्भ की गई सिंचाई योजनाओं के अतिरिक्त 96 योजनायें चालू हैं जिन पर इस वर्ष में लगभग एक करोड रुपये खर्च होने का अनुमान है। अकाल की स्थिति में लिफ्ट द्वारा सिंचाई योजनाओं को इस वर्ष विशेष प्राथमिकता दी गई है तथा जिन नदियों व दह में जल उपलब्ध है वहां बिजली पहुंचाई जाकर लिफ्ट-सिंचाई प्रारम्भ की जा चुकी है। अब तक लगभग 13 स्थानों पर यह कार्य आरम्भ किये जा चुके हैं।

19. राजस्थान नहर का कार्य प्रगति पर है। 1967-68 में इस नहर से 1 लाख 98 हजार एकड भूमि में सिंचाई हुई थी। दिसम्बर, 1968 तक 1 लाख 92 हजार एकड भूमि में सिंचाई की जा चुकी है तथा इस वर्ष के अन्त तक लगभग 2 लाख 14 हजार एकड भूमि में सिंचाई होने की आशा है। अनूपगढ शाखा की वितरण प्रणाली का कार्य प्रगति पर है। लूणकरणसर-बीकानेर लिफ्ट नहर पर जुलाई, 1968 से कार्य प्रारम्भ किया जा चुका

(सरदार हुकमसिंह)

है । इस योजना के अन्तर्गत एक लाख 26 हजार एकड भूमि में सिंचाई होने का अनुमान है । यह निश्चय किया गया है कि राजस्थान नहर परियोजना पर सिंचन सघनता को 78 प्रतिशत से बढा कर 110 प्रतिशत कर दिया जावे और वितरण प्रणाली को पक्का करने का कार्य भी मुख्य नहर के पक्का करने के साथ साथ किया जावे । नौरंगदेसर, रावतसर, जोरावरपुरा, खेतावाली और खोडा वितरक नहरों का निर्माण-कार्य पूरा हो चुका है और सूरतगढ शाखा का कार्य भी लगभग समाप्ति पर है ।

20. इस वर्ष प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा की नई सुविधायें उपलब्ध की गई हैं । चालू सत्र में 196 माध्यमिक एवं 92 उच्च माध्यमिक शालायें व 4 उच्चतर माध्यमिक शालाय खोली गई है । 6 पंचायत समितियां में जिनमें हाई स्कूल नहीं थे, हाई स्कूल खोल दिये गये हैं । विभिन्न आयु वर्गों मे स्कूल जाने वाले छात्रों की संख्या में संतोष-जनक वृद्धि हुई है । 6 से 11 वर्ष की आयु के बच्चों मे पिछले वर्ष में 54.5 प्रतिशत के मुकाबले इस वर्ष 56.5 प्रतिशत विद्यार्जन हेतु आये । 11 से 14 वर्ष की आयु में यह प्रतिशत पिछले वर्ष के 22.9 से बढ़ कर 23.3 प्रतिशत हो गया है । 14 से 17 वर्ष की आयु में यह पिछले 10.6 प्रतिशत से बढ कर इस वर्ष 11 प्रतिशत हो गया है।

21. अलवर, भरतपुर, श्री गंगानगर, भीलवाडा, कोटा व बीकानेर के कालेजों में इस वर्ष पोस्ट-ग्रेजुएट कक्षाएं खोली गई हैं। इस वर्ष राज्य में दो नये कालेज सुजानगढ व लाडनू में खोले गये और रामगढ के एक प्राईवेट कालेज को राज्य सरकार ने ले लिया है। चार कालेजों के भवनों के निर्माण-कार्य भी इस वर्ष हाथ में लिये गये हैं ।

22. सरकार द्वारा तकनीकी तथा अन्य कर्मचारियों के विशेष लेखों, पुस्तकों, अनुसंधान, पत्रादि के लिए प्रोत्साहन देने हेतु नकद पुरस्कार एवं योग्यता-वेतन देने के नियम बनाये हुए हैं । इन नियमों के अन्तर्गत अब तक 27 तकनीकी कर्मचारियों को योग्यता-वेतन तथा तीन अन्य कर्मचारियों को नकद पुरस्कार दिये गये हैं । इससे राज्य कर्मचारियों की आगे अनुसंधान करने तथा मौलिक लेखादि लिखने में रुचि बढी है। इन पुरस्कार विजेताओं में से कुछ का कार्य तो राष्ट्रीय स्तर का ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का माना गया है । तथा उनके अनुसंधान कार्य की देश विदेशों में सराहना की गई है ।

23. वर्तमान में अनुसूचित जाति तथा जन जाति के 106 छात्रावास चल रहे हैं । छात्रावासों में विद्यार्थियों की सहायतार्थ विज्ञान एवं गणित विषयों को पढाने हेतु 78 अंशकालीन अध्यापकों की नियुक्ति भी की जा चुकी ह ।

24. सन् 1967-68 के अन्त तक 71 नगरीय जल-प्रदाय योजनाओं तथा अनेक ग्रामीण जल-प्रदाय योजनाओं का कार्य पूर्ण हो चुका है । चालू वर्ष में जीवन बीमा निगम ने नगरपालिकाओं को इस योजना के लिए 1.07 करोड रुपये की धनराशि का ऋण देना स्वीकार किया है जो वर्ष के अन्त तक मिल जायेगा । चालू वर्ष के अन्त तक लगभग 12 नई नगरीय जल-प्रदाय योजनाओं

(सरदार हुकमसिंह)

व लगभग 30 ग्रामीण जल-प्रदाय योजनाओं का कार्य पूर्ण हो सकेगा।

25. राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाओं का सुधार करने हेतु राज्य सरकार ने इसी वर्ष दवाइयों और खुराक के लिए दी जाने वाली धनराशि में 35 लाख रुपये की अभिवृद्धि की है तथा सात नये चिकित्सा संस्थानों की स्थापना की स्वीकृति दी है। भ्रमणशील शल्य इकाई से ग्रामीण जनता को शल्य-चिकित्सा की सुविधा प्राप्त होती है। इस वर्ष में अब तक भ्रमणशील शल्य इकाई के कुल सात कैम्प लग चुके हैं जिनमें 5,529 आपरेशन किए गये हैं। अगले वर्ष इस कार्य-क्रम को अधिक प्रगतिशील बनाने की योजना है। इसके अन्तर्गत चेचक उन्मूलन मलेरिया व क्षय रोगों को नियंत्रित करने का कार्य-क्रम भी राष्ट्रीय स्तर के ऊपर चालू है जिनसे जनता को काफी लाभ मिला है तथा इन रोगों पर काफी हद तक रोक लग चुकी है।

26. चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में आशातीत प्रगति हुई है। इस वर्ष में सवाई मानसिंह कालेज, जयपुर में अधिस्नातक शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सर्जरी विभाग का उच्चीकरण किया गया। बीकानेर तथा उदयपुर मेडिकल कालेजों में मुख्य विषयों में अधिस्नातक शिक्षा की व्यवस्था कर दी गई है। सवाई मानसिंह अस्पताल, जयपुर में आंखों के बैंक की स्थापना की गई है तथा फिजियोथेरेपी के डिप्लोमा का प्रशिक्षण इस वर्ष से प्रारम्भ कर दिया गया है। भारत सरकार की सहायता से अजमेर व जोधपुर जिलों के अस्पतालों में ब्लड-बैंक की स्थापना कर दी गई है। मैडिकल कालेज छात्रावास भवनों के निर्माण हेतु सरकार ने सवा चौदह लाख रुपया स्वीकृत किया है।

27. मेडिकल कालेजों के विशेषज्ञों की सेवाएं ग्रामीण क्षेत्रों को उपलब्ध कराने के लिए नई योजना अगले वर्ष से चालू की जा रही है जिसके अन्तर्गत मेडिकल कालेजों से विशेषज्ञ अन्य विद्यार्थियों के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र पर कैम्प लगाकर विशेषज्ञ सेवा उपलब्ध करायेंगे।

28. राज्य में अभी भी डाक्टरों का अभाव है और विशेषकर लेडी डाक्टरों का। किन्तु ऐसी आशा है कि आगामी 2-3 वर्षों में यह कमी पूरी हो जायेगी। राज्य में मेडिकल कालेजों में आइन्दा प्रवेश पाने के लिए पूर्व प्रवेश परीक्षा अर्थात् प्री-मेडिकल टैस्ट का प्रावधान किया गया है और इस परीक्षा के आधार पर ही मेडिकल संस्थानों में विद्यार्थी प्रवेश पा सकेगा।

29. परिवार नियोजन कार्य-क्रम पर विशेष जोर दिया गया। इस कार्य-क्रम में तेजी लाने के लिए चालू वर्ष में 3 परिवार नियोजन पखवाड़े मनाये गये जिनमें लगभग 13 हजार 560 वन्ध्यकरण आपरेशन तथा 7 हजार 273 लूप लगाये गये। इसके अतिरिक्त इस कार्य-क्रम के अन्तर्गत अप्रेल से दिसम्बर, 1968 तक कुल 24 हजार 25 वन्ध्यकरण आपरेशन, 14 हजार 849 लूप लगाये गये तथा 9 लाख 15 हजार अन्य उपकरण इस योजना के अन्तर्गत बांटे गये हैं।

30. इस वर्ष सी-श्रेणी के 25 नये आयुर्वेद औषधालय ग्रामीण क्षेत्रों में खोले गये हैं। भारत सरकार की सहायता से राज्य में गूगल उत्पादन संबंधी योजना इस

Page No 20

(सरदार हुकमसिंह)

वर्ष आरम्भ की है। आयुर्वेदिक कालेज, जयपुर में एक्जीमा तथा संग्रहणी रोगों से सम्बन्धित अनुसंधान-केन्द्र स्थापित किये गये हैं। इनमें अनुसंधान-कार्य चल रहा है।

31. 1966 में समाप्त होने वाले 3 वर्षों में राजस्थान को कठिन विद्युत्-संकट का सामना करना पड़ा था, परिणाम-स्वरूप विद्युत्-उपयोग पर तीव्र कटौतियां करनी पड़ी थीं परन्तु 1967 से गांधीसागर बांध में काफी मात्रा में पानी आ जाने के कारण बिजली के उत्पादन में लगातार वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त सतपुडा की तीसरी तथा चौथी इकाई तथा राणा प्रताप सागर की तृतीय इकाई के चालू हो जाने से विद्युत्-संकट प्राय: समाप्त हो गया है और अब उद्योगों पर लगी सभी कटौतियां एवं नये कनेक्शन देने की सभी पाबंदियां हटा दी गई हैं।

32. इस समय राजस्थान के सभी बिजली के स्रोतों से कुल 25 लाख यूनिट के लगभग बिजली प्रति दिन मिल रही है। 1969-70 के अन्त तक अनुमानत: 36 लाख यूनिट प्रति दिन बिजली प्राप्त हो सकेगी और यदि अनुकूल परिस्थितियां रहीं तो यह उत्पादन 1970-71 तक 40 लाख यूनिट प्रतिदिन तक हो जायेगा।

33. राणा प्रताप सागर की चतुर्थ इकाई का काम 1969-70 तक पूरा हो जाने की आशा है तथा जवाहर सागर बांध का कार्य प्रगति पर है। 1970-71 में इससे बिजली उपलब्ध होने का अनुमान है।

34. 1970 के अन्त तक अणु-शक्ति स्टेशन की प्रथम इकाई चालू होने पर 175 मेगावाट बिजली उपलब्ध हो जायेगी।

35. माही परियोजना, जो कि अनुसूचित जन जाति क्षेत्र के लिये सिंचाई एवं बिजली दोनों ही दृष्टि से लाभप्रद होगी, के कार्य की गति तीव्र करने के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं।

36. विद्युत्-प्रसारण लाइनों को बढ़ाने व नई लाइनों को चालू करने का प्रयास गति पर है। अतिरिक्त प्रसारण लाइनों को शीघ्रातिशीघ्र बढ़ाने का प्रयास जारी है। रतनगढ़-सीकर लाइन पर सीकर नगर में 132 के. वी. का स्टेशन प्रारम्भ कर दिया गया है तथा मार्च, 1969 तक अलवर-भरतपुर 132 के. वी. प्रसारण लाइन तथा राणा प्रताप सागर-भीलवाड़ा डबल सर्किट 132 के. वी. प्रसारण लाइन पूर्ण होने की आशा है। खेतड़ी उप-स्टेशन को मार्च के मध्य तक 220 के. वी. लाइन से जोड़ दिया जायेगा। मई, 1969 तक भीलवाड़ा और पाली के मध्य 132 के. वी. प्रसारण लाइन तथा पाली, जोधपुर और फालना पर सम्बन्धित उप-स्टेशनों के पूर्ण हो जाने की आशा है।

37. अगले वित्तीय वर्ष में करीब 400 ग्रामों में बिजली पहुंचाने का कार्य पूर्ण होने की संभावना है। गत वर्ष 3196 नये कुओं में बिजली के कनेक्शन दिये गये तथा इस वर्ष लगभग 5000 कुओं में बिजली के नये कनेक्शन दिये जाने के लक्ष्य को पूरा करने का प्रयत्न किया जा रहा है। अब तक करीब 4000 कुओं को कनेक्शन दिये जा चुके हैं तथा वर्ष की समाप्ति तक आशा है कि ऐसे कुओं की कुल संख्या 18 हजार 700 हो जायेगी। इस कार्य-क्रम को अगले वर्ष में भी सक्रिय रूप से लिया जायेगा।

(सरदार हुकमसिंह)

38. पिछले वर्षों में पर्याप्त मात्रा में बिजली उपलब्ध न होने के कारण औद्योगिक प्रगति कुछ अवरुद्ध रही थी किन्तु अब बिजली की समस्या का लगभग समाधान हो जाने के कारण औद्योगिक विकास में और भी गति आने की आशा है। इसी प्रकार भारत सरकार की उदार आयात-नीति लोहे व इस्पात का विनियन्त्रण एवं राज्य सरकार द्वारा प्रदान की गई अनेक सुविधाओं के फलस्वरूप औद्योगीकरण को प्रोत्साहन मिल रहा है। राजस्थान में हुई औद्योगिक प्रगति का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि जब राजस्थान बनने के समय फैक्ट्री अधिनियम में पंजीकरण होने वाली फैक्ट्रियों की संख्या केवल 207 थी, वह दिसम्बर, 1968 के अन्त तक लगभग 9 गुनी बढ़कर 1846 हो गई है। राज्य के उद्योग संचालनालय में पंजीकृत होने वाली उद्योगों की संख्या भी दिसम्बर, 1968 के अन्त तक 7237 हो गई है। केवल वर्ष 1968 में ही 548 नई लघु इकाइयों का पंजीकरण हुआ था। राज्य की औद्योगिक इकाइयों द्वारा राज्य की आय में वर्ष 1954-55 में लगभग 65 करोड रुपये का योगदान था जो अब बढ़कर लगभग दुगना अर्थात् 131 करोड रुपये हो गया है।

39. राज्य में अभी तक 15 औद्योगिक क्षेत्र घोषित किये जा चुके हैं जहां स्थापित होने वाले उद्योगों को रियायती दर पर जमीन उपलब्ध करा कर अन्य सुविधायें प्रदान की जाती हैं।

40. राज्य सरकार द्वारा चलाये जाने वाले उद्योगों के अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र में राजस्थान में कुछ महत्वपूर्ण उद्योग लगाये जा रहे हैं। उदयपुर में स्थापित जिंक-स्मैल्टर ने 18,000 टन प्रति वर्ष जस्ता एवं एक लाख 76 हजार 200 टन फोस्फेटिक खाद का उत्पादन आरम्भ कर दिया है। इस स्मैल्टर की क्षमता को दुगना करने को सिद्धान्त: भारत सरकार ने स्वीकार कर लिया है। इस क्षेत्र में जस्ता और सीसे के विशाल भन्डार उपलब्ध हैं। और यह आशा की जाती है कि भविष्य में इन खनिज भन्डारों पर आधारित जिंक स्मैल्टर की नई इकाइयां भी इस क्षेत्र में स्थापित की जा सकेंगी। ऐसा अनुमान है कि इन भन्डारों पर आधारित स्मैल्टरों में लगभग 1 लाख टन जस्ते का उत्पादन सम्भव हो सकेगा। भारत सरकार द्वारा खेतडी में स्थापित होने वाले कापर-स्मैल्टर का कार्य भी गति पूर्वक चल रहा है। यह आशा की जाती है कि सन् 1971 के अन्त तक स्मैल्टर की स्थापना हो जावेगी और सन् 1972 में तांबे का उत्पादन शुरू हो जायेगा। इसके अतिरिक्त इस कारखाने में 2 लाख 14 हजार 400 टन फोस्फेटिक खाद्य भी प्रति वर्ष बनने लगेगा। इस क्षेत्र में तांबे की खानों के विकास एवं स्मैल्टर की स्थापना में लगभग 96 करोड की लागत होने का अनुमान है। भारत सरकार द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र में इन्स्ट्रूमेन्ट्स बनाने का कारखाना भी कोटा में स्थापित हो चुका है और इसमें उत्पादन भी शुरू हो गया है। ऐसा अनुमान है कि सन् 1969-70 में करीब 3 करोड रुपये का सामान इस कारखाने में उत्पादित किया जावेगा। इसी प्रकार सार्वजनिक क्षेत्र में मशीन-टूल बनाने का कारखाना अजमेर में लगाया जा रहा है। इस कारखाने में करीब साढ़े चार करोड

(सरदार हुकमसिंह)

रुपये का उत्पादन प्रति वर्ष होने की सम्भावना है। ऐसी आशा है कि इस कारखाने में कुछ मशीनें 2 दिसम्बर, 1969 में ही बनने लगेगी।

41. राज्य सरकार द्वारा डूंगरपुर जिले में मांडोकी-पाल स्थान पर फ्लोराइट बनाने के कारखाने की स्थापना हेतु सक्रिय कदम उठाये जा रहे हैं। इस कारखाने की कुल मिलाकर करीब 2 करोड़ रुपये की लागत होगी।

42. सार्वजनिक क्षेत्र में चमड़े का कारखाना (लेदर टेनरी) स्थापित करने की दिशा में विशेष प्रगति हो चुकी है।

43. निजी क्षेत्र में भी इस वर्ष औद्योगीकरण की अच्छी प्रगति रही है। कोटा में फर्टीलाइजर फैक्टरी ने कुछ उत्पादन शुरू कर दिया है। एक्रीलिक फाइबर प्लांट कोटा में भी उत्पादन आरम्भ हो गया है। उदयपुर निम्बाहेड़ा और ब्यावर में भी सीमेन्ट के कारखानों की स्थापना करने के सम्बन्ध में उठाये गये कदम प्रगति पर है। भरतपुर में मिल्क प्रोडक्ट्स बनाने का कारखाना और गंगापुर में बनस्पती घी बनाने के कारखाने की की निकट भविष्य में स्थापना होने की आशा है। बिजली के बल्ब व ट्यूब्स का कारखाना जयपुर में, ऑक्सीजन तथा एसीटीलिक गैस का कारखाना कोटा में एवं दुग्ध-चूर्ण तथा माल्टेड दूध का कारखाना जोधपुर में स्थापित करने हेतु भारत सरकार द्वारा लाईसेन्स प्रदान किये गये हैं।

44. उदयपुर जिले में राक फास्फेट का और सीकर जिले में सलादीपुरा स्थान के पास पाइराइट्स के विशाल एवं महत्वपूर्ण खनिज भन्डारों का पता चला है। राक-फास्फेट के चार करोड टन के भन्डार सिद्ध किये जा चुके हैं। पाइराइट्स के करीब 9 करोड़ टन के भन्डार उपलब्ध होने का अनुमान है। इन दो खनिजों पर आधारित रासायनिक खाद बनाने के बहुत बड़े कारखाने की राजस्थान में स्थापना होने की सम्भावना प्रबल हो गई है। ऐसा अनुमान है कि राक-फास्फेट के उन भन्डारों से सारे देश की मांग को पूरा किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा पूर्वेक्षण के किये जाने के फलस्वरूप लाइम-स्टोन, बेराइट्स के भन्डारों की भी खोज हुई हैं। लाइम-स्टोन के भन्डारों पर कई सीमेन्ट के नये कारखानों की स्थापना सम्भव है। राजस्थान में विभिन्न स्थानों पर संगमरमर पत्थर की भी खोज हुई है। ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है कि इस पत्थर को काटने व पालिश करने का बड़ा कारखाना निजी क्षेत्र में लग सके ताकि इस प्रकार तैयार किया हुआ पत्थर देश के अन्य भागों में व विदेशों में भी भेजा जा सके।

45. राजस्थान लघु उद्योग निगम हस्तकलाओं के व्यापार बढ़ाने में प्रयत्न शील है। हस्तकला की वस्तुओं के निर्यात पर जोर दिया जा रहा है। गत वर्ष करीब 5 लाख रुपये का निर्यात हुआ था और अब इसे 10 लाख रुपये तक पहुंचाने का लक्ष्य है। हस्तकला-एम्पोरियम द्वारा वर्ष 1967-68 में करीब 17 लाख रुपये की बिक्री हुई थी और इस वर्ष इसे पच्चीस लाख रुपये तक पहुंचाने का लक्ष्य है।

46. राजस्थान वित्त निगम के माध्यम से लघु उद्योगों को रियायती दरों पर ऋण उपलब्ध कराना आरम्भ कर दिया गया है।

(सरदार हुकमसिंह)

47. इस वर्ष अकाल-ग्रस्त क्षेत्रों में राहत पहुंचाने हेतु खादी ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा एक विशेष योजना अपनाई गई है जिसके अन्तर्गत 7 लाख 61 हजार रुपये स्वीकृत किये जा चुके हैं। खादी बोर्ड द्वारा संस्थाओं एवं सहकारी समितियों को करीब 4 करोड रुपये का ऋण और करीब 1 करोड रुपये का अनुदान दिया जा चुका है।

48. इस वर्ष औद्योगिक क्षेत्र में व्यवस्थापकों व श्रमिकों के बीच शान्तिपूर्ण सम्बन्ध रहे और फलस्वरूप औद्योगिक प्रगति का वातावरण उत्साहवर्धक रहा।

49. 1968-69 में सडकों के कार्य हेतु 1 करोड रुपये की धनराशि रखी गई थी। इस राशि का अधिकांश अंश उन कार्यों में लग गया जो पहले से चल रहे थे। 20 लाख रुपये की धनराशि नई सडकों तथा पुलों के निर्माण के लिए उपलब्ध थी जिसमें से कई महत्वपूर्ण सडकों और पुलों के बनाने का कार्य हाथ में लिया गया।

50. इस वर्ष महुवा के निकट गम्भीरी नदी पर पुल बनाने का कार्य समाप्त हो गया है और महावीरजी के निकट गम्भीरी नदी पर दूसरा पुल शीघ्र पूरा होने वाला है। बांसवाडा सागवाडा, सडक पर माही नदी पर पुल बनाने के बारे में कार्यवाही की जा रही है।

51. सीमावर्ती सडकों में ऊंची प्राथमिकता वाले अधिकांश कार्य इस वित्तीय वर्ष में समाप्त हो जायेंगे इसके पश्चात् 8 नये कार्य लेने का निर्णय हो चुका है। कुछ सडकों पर कोल-तार डालने का कार्य भी लिया जायेगा।

52. सहकारिता आन्दोलन का विस्तार सम्पूर्ण राज्य में हो गया है। वर्तमान सहकारी समितियों का पुनर्गठन किया जा रहा है एवं उन्हें सुदृढ़ बनाने पर बल दिया जा रहा है। रिजर्व बैंक आफ इन्डिया के सक्रिय सहयोग से सहकारी बैंकों को भी सुदृढ़ करने के कार्य की ओर सरकार का पूरा ध्यान है। सहकारिता क्षेत्र में ग्रामीण गोदाम भी बनाये जा रहे हैं। बूंदी जिले के केशोरायपाटन कोऑपरेटिव शुगर फैक्टरी में आगामी गन्ने की कटाई की फसल तक उत्पादन शुरू हो हो जायेगा।

53. अधिक उपज देने वाली फसलों के क्षेत्र में प्रति-वर्ष वृद्धि हो रही है। इन फसलों के बीज, खाद आदि के लिये साधारण फसलों के मुकाबले में अधिक धन की आवश्यकता होती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति सहकारी समितियों द्वारा की जाती है किन्तु कुछ क्षेत्रों में यह समितियां पूर्ण रूप से सक्षम नहीं है। अतः एक कृषि ऋण निगम की स्थापना की जा रही है। जिससे किसानों को जहां सहकारी समितियां पूर्ण रूप से सक्षम नहीं है उन क्षेत्रों में इस निगम से कृषि कार्यों के लिये आवश्यक सहायता उपलब्ध हो सकेगी।

54. सिंचाई तथा ट्रैक्टर व अन्य कृषि में काम आने वाले यंत्रों तथा खाद व बीज के लिये गत वर्ष तक आयोजना-व्यय से किसानों को ऋण दिया जाता रहा किन्तु राज्य के सीमित साधनों के कारण अब यह कोशिश की जा रही है कि अधिक से अधिक धन दूसरे साधनों से प्राप्त हो इस हेतु व्यावसायिक बैंकों को कृषि कार्यों के लिए ऋण देने की सीमा निर्धारित करदी है। बैंक भी इसमें

(सरदार हुकमसिंह)
काफी रुची से कार्य कर रहे हैं और अब तक इस वर्ष में व्यावसायिक बैंकों द्वारा 50 लाख रुपये से ऊपर ऋण किसानों को दिया जा चुका है।

55. भूमि सुधार तथा जागीर उन्मूलन के सम्बन्ध में जो कदम उठाये गये थे वह कार्य प्रगति पर है। अब तक 42 लाख एकड़ से भी अधिक भूमि, भूमिहीन काश्तकारों को, जिनमें अनुसूचित जन जाति के लोग, स्वर्णकार, भूतपूर्व सैनिक भी हैं, आवंटित की गई हैं। उपलब्ध आंकडों के अनुसार 1968 में 20 हजार 640 भूमिहीन व्यक्तियों को भूमि आवन्टित की जा चुकी है।

56. तेजी से कटते हुए वन एक समस्या बन रहे थे। इसका प्रभाव वर्षा पर भी प्रतिकूल पड रहा था। वनों को बढाने के लिए ठेके देने की पद्धति में भी परिवर्तन आवश्यक समझा गया। इस वर्ष कोयला आदि बनाने के लिए पेडों की कटाई के ठेके देने बन्द कर दिये गये हैं। राजस्थान नहर क्षेत्र में इकोनोमिक प्लान्टेशन (Econo- Plantation) कार्य सक्रिय रूप से क्रियान्वित किया जा रहा है।

57. यातायात निगम के माध्यम से अब तक 8 प्रतिशत राज्य मार्गों का राष्ट्रीयकरण किया जा चुका है। इन मार्गों पर निगम के 325 वाहन प्रति दिन लगभग 56 हजार किलो मीटर यात्रा करते हैं। इन सेवाओं से 53 हजार यात्रीगण प्रति दिन लाभ उठाते हैं। हर्ष की बात है कि अब निगम घाटे के बजाय लाभ की ओर जा रहा है। इस वर्ष गंगानगर जिले में कुछ मार्गों का पूर्ण रूपेण राष्ट्रीयकरण किया गया है।

58. राज्य कर्मचारियों के मंहगाई भत्ते के बारे में राज्य सरकार द्वारा पूर्व में अपनाई गई नीति के अनुसार केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के मंहगाई भत्ते में जब जब वृद्धि हुई है उसी के अनुसार राज्य सरकार ने अपने कर्मचारियों के मंहगाई भत्ते में बढोतरी करदी है। राज्य कर्मचारियों की वेतन-श्रृंखलाओं का पुनः निरीक्षण करने के लिए एक सदस्य राणावत वेतन आयोग की नियुक्ति की गई थी। इस आयोग ने अपना प्रतिवेदन जुलाई, 1968 में प्रस्तुत किया। इस आयोग की सिफारिशों पर राज्य सरकार ने विचार-विमर्श कर नई वेतन-श्रृंखलाएं एक सितम्बर, 1968 के लागू कर दी हैं और इस विषय में आवश्यक नियम भी प्रसारित किये जा चुके हैं। इन श्रृंखलाओं के लागू हो जाने से लगभग सभी राज्य कर्मचारियों को लाभ हुआ है।

59. 1968 में राज्य की कानून व्यवस्था संतोषप्रद एवं नियंत्रण में रही है। सीमावर्ति जिलों में भी कानून व्यवस्था नियंत्रित रही है व पुलिस का प्रबन्ध भी सुदृढ़ रहा है। राज्य के पूर्वी जिलों में कुछ संगठित डकैत गिरोहों की हलचलें बढती हुई दिखाई दी थीं किन्तु हमारी पुलिस के सक्रिय प्रयासों के फलस्वरूप स्थिति पर काबू पाया गया। 1968 में हमारी पुलिस ने 21 मुकाबले डकैतों के साथ किये जिनमें 5 डकैत मारे गये, 68 डकैत गिरफ्तार किए गये व एक ने आत्म-समर्पण किया। डकैतों से भारी मात्रा में शस्त्र आदि भी बरामद किये गये।

(सरदार हुकमसिंह)

60. नागरिक-सुरक्षा कार्य में भी इस वर्ष अच्छी प्रगति हुई है। गत वर्ष केवल 5 नगरों में ही यह कार्य सीमित था। इस वर्ष 5 और नगरों में यह कार्य लागू हो गया है। राजस्थान पुलिस ने अपने अराजपत्रित कर्मचारियों की सहायतार्थ एक सहायता कोष भी स्थापित किया है जो कम वेतन पाने वाले कर्मचारियों के निधन पर उनके परिवार को सहायता व बच्चों की शिक्षा के लिए धनराशि प्रदान करता है।

61. गांधी शताब्दी के अवसर पर सरकार ने 2 अक्टूबर, 1968 से विभिन्न प्रकार के कैदियों को दण्ड की अवधि में विशेष छूट दी है। इसके अतिरिक्त हाल ही में 30 जनवरी, 1969 से कुछ अन्य सुविधायें भी दी गई हैं जिनमें महिला कैदियों तथा मृत्यु दण्ड पाने वाले कैदियों को विशेष रियायतें दी गई हैं। अशिक्षित व अल्प-शिक्षित कैदियों को शिक्षा दिये जाने हेतु प्रौढ़ शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा एवं उत्तरोत्तर शिक्षा योजनायें सुचारु रूप से चल रही हैं। राज्य के बड़े कारागृहों में पुस्तकालय व वाचनालयों की भी सुविधा उपलब्ध करदी गई है। कारागृहों में औद्योगिक कार्य भी प्रगति पर है। राज्य सरकार द्वारा बड़े कारागृहों में पावरलूम योजना शीघ्र लागू करदी जावेगी।

62. राज्य में देशी तथा विदेशी पर्यटकों को बड़ी संख्या में आकर्षित करने हेतु सरकार पर्यटन-महत्व के सभी स्थानों को और सुन्दर बनाने में प्रयत्नशील है जिसके फलस्वरूप वर्ष 1965 में जब कि केवल 1,500 विदेशी तथा 8 लाख देशीय पर्यटक आये थे गत वर्ष 1968 में 31 हजार विदेशी तथा 13 लाख से भी अधिक देशीय पर्यटक आये।

63. केन्द्रीय सरकार के निर्णय के अनुसार चौथी पंचवर्षीय योजना अगले वित्तीय वर्ष से प्रारम्भ की जावेगी। राज्य सरकार ने चौथी पंचवर्षीय योजना का आकार रुपये 313 करोड प्रस्तावित किया है किन्तु इस पर अभी तक योजना आयोग द्वारा अंतिम निर्णय नहीं लिया जा सका है।

64. 1967-68 में वर्तमान मूल्यों पर राज्य की आय रुपये 1155 करोड हो गई जबकि 1966-67 में यह रुपये 1023 करोड थी। इस प्रकार राज्य की आय में 12.90 प्रतिशत वृद्धि हुई। चूंकि आबादी 2.33 प्रतिशत के लगभग प्रतिवर्ष बढ रही है इसलिए इस समय में प्रति व्यक्ति आय 10.15 प्रतिशत वृद्धि सम्भव हुई। राज्य की प्रति व्यक्ति आय 1966-67 में रुपये 453 से बढकर 1967-68 में रुपये 499 हुई। यद्यपि पिछले वर्ष राज्य की आय तथा प्रति व्यक्ति आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है परन्तु इस वर्ष अकाल की स्थिति के कारण इस पर प्रतिकूल प्रभाव पढ़ने की आशंका है।

65. सन् 1969 का वर्ष गांधी-शताब्दी का वर्ष है। गांधीजी ने न केवल देश की आजादी के लिये मार्ग-दर्शन किया बल्कि आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विचार-धाराओं का कार्य-क्रम रखा। यह उपयुक्त होगा कि हम गांधी-शताब्दी के रूप में इस वर्ष उनकी विचारधाराओं को सामने रख कर आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में आगे बढें। उसी के अनुरूप राज्य सरकार

(सरदार हुकमसिंह)
ने क्रमिक शराब-बन्दी की योजना को स्वीकार किया है । शराब की दुकानें 1969-70 में दो दिन, 1970-71 में चार दिन, 1971-72 में 6 दिन प्रति सप्ताह बन्द रहेगी, इसके पश्चात् पूर्ण मद्य निषेध होगा ।

66. राजस्थान के अधिकांश भागों में जुडिशरी एक्जीक्यूटिव से पृथक् हो चुकी है । राजस्थान दिवस दिनांक 30-3-69 से शेष बचे हुए 22 उप-खण्डों में भी यह पृथकीकरण कर दिया जावेगा ।

67. इस सत्र का मुख्य कार्य, जिसके लिए आपको यहां आमन्त्रित किया गया है वह आगामी वित्तीय वर्ष के लिए आय-व्ययक पर विचार-विमर्श करना एवं उसे पारित करना तथा तत्सम्बन्धी कानून बनाना है । मुझे ऐसा विश्वास है कि आय-व्ययक पर विचार-विमर्श करते समय आप राज्य के सर्वांगीण विकास हेतु ध्यान रखेंगे जिसके लिए हम सभी कृत-संकल्प हैं । राज्य सरकार इस सत्र में मोटरगाडी (राजस्थान संशोधन) विधेयक, 1969, न्यूनतम मजदूरी (राजस्थान संशोधन एवं विधि मान्यकरण) विधेयक, 1969, दी बाम्बे प्रोहिबीशन (राजस्थान संशोधन) विधेयक, 1969, राजस्थान पंचायत विधियां (संशोधन) विधेयक, 1969, राजस्थान विधान सभा सदस्य (निरर्हता निवारण) विधेयक, 1969, राजस्थान उद्योगों के लिए राजकीय सहायता (संशोधन) विधेयक, 1968, राजस्थान सिनेमा (नियमन) संशोधन विधेयक, 1968, राजस्थान भूमि (एकीकरण तथा विखण्डन निवारण) (संशोधन तथा वैधकरण) विधेयक, 1968, राजस्थान आबकारी कर (संशोधन) विधेयक, 1968, राजस्थान मोटर-गाडी करारोपण (संशोधन) विधेयक, 1969, राजस्थान नगरीय भूमि कर (संशोधन) विधेयक, 1968, राजस्थान होमियोपैथिक चिकित्सा विधेयक, 1968, राजस्थान मनोरंजन तथा विज्ञापन कर (संशोधन) विधेयक, 1969 एवं राजस्थान कोलोनाईजेशन (संशोधन) विधेयक, 1969 आदि भी आपके समक्ष विचार-विमर्श एवं उचित कार्यवाही के लिए प्रस्तुत करेगी ।

68. राज्य सरकार के महत्वपूर्ण कार्यों व उनमें मिली सफलता का लेखा-जोखा मैंने आपके समक्ष प्रस्तुत किया तथा आगामी वर्ष में राज्य सरकार विभिन्न क्षेत्रों में जो महत्व-पूर्ण कदम उठाने का विचार रखती है उसका कुछ संकेत भी आपके सामने प्रस्तुत किया । इनमें सफलता मिलने के लिए राज्य सरकार को आपके पथ-प्रदर्शन, सम्मति और सहयोग की अपेक्षा होगी । राज्य सरकार की समस्याओं के समाधान हेतु आपके जो भी विचार होंगे वे लोक-कर्तव्य एवं जनहित की भावनाओं से परिपूर्ण होंगे । मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप अपने कर्तव्यों को सफलता के साथ निभायेंगे तथा राज्य को बहुमुखी विकास की ओर अग्रसर होने में आप अपना सहयोग देंगे । इसके लिए आपके द्वारा किये जाने वाले सद्प्रयत्न सफल हों, यह ही मेरी शुभ कामनायें आपके साथ हैं ।

:जय हिन्द:

शुद्धि-पत्र

(सोमवार, दिनांक 24 फरवरी, 1969)

स्कम्भ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
1.	2	वि। I	विधान
„	अन्तिम से 7	क्रो ड. एन अन्नादुरे	श्री डी. एन. अन्नादुरे
„	14	क्रान्तिकारी क्रान्तिकारी विचारक	क्रान्तिकारी विचारक
7.	शीर्ष	(श्री मोहन लाल सुखाडिया)	(श्री मोहन लाल सुखाड़िया
„	14	जसे	जैसे
8.	अन्तिम	था	थी
11.	अन्तिम से 15	उतर प्रदश	उत्तर प्रदेश
12.	8	जीवत	जीवित
14.	अन्तिम	अन्ना्	अन्नादुरे
16.	8	संघर्ष	संघर्ष
18.	अन्तिम से 15	कट्टरता	कट्टरता
„	अन्तिम	में	ने
19.	अन्तिम से 2	श्री मनोहर सिंह महा	श्री मनोहर सिंह मेहता
21.	„ 3	नारायसणी	नारायणी
22.	अन्तिम	लेक	लेकर
24.	5	भतपर्व मख्म मंत्री	भूतपूर्व मुख्य मंत्री
28.	अन्तिम से 15	हु	है
„	„ 12	4	48
29.	4	नियान्दित	क्रियान्वित
„	अन्तिम से 12	3 कराड	3 करोड
„	„ 11	तालाबां	तालाबों
31.	„ 10	हु	है
35.	5	लगगो	लगेंगी
„	अन्तिम से 10	की की	की
36.	14	1968-6	1968-69
„	अन्तिम से 3	ही	हो
„	„ 3	।।प्त	प्राप्त
37.	शीर्ष	(सरदार हुक्मसिंह)	(सरदार हुकमसिंह)
„	5	नावे	नीति